पैदावार :

- 1.0 से 1.2 टन / हेक्टेयर से बीज (शुष्क भार) प्राप्त किये जा सकते है।

बाकुची की खेती

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष: 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वैबसाईट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्राद्योगिकी का विकास महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ (एमपीकेवी), रहुरी, महाराष्ट्र द्वारा किया गया है।

सामान्य नाम	:	बाकुची
वानस्पतिक नाम	:	सोरालिया कोरिलीफोलिया
कुल	:	फैबेसी
उपयोगी भाग	:	बीज
सामान्य प्रयोग	:	बीजों का उपयोग कुष्ठ रोग, ल्यूकोडर्मा, सोरायसिस, त्वचा के रोगों के उपचार में किया जाता है। डेंड्रफ के उपचार हेतु सिर में लगाने के लिए बीजों के तेल उपयोग किया जाता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

बाकुची

सोरालिया कोरिलीफोलिया
कुल–फैबेसी

बाकुची एक दो फांक वाला, वार्षिक पौधा है जो सही तरीके से फलने पर 60–100 सेमी लंबा हो जाता है। इसके बीजों पर एक चिपचिपे तैलीय पदार्थ लगा होता है जिसमें सोरालीन नामक रसायन होता है।

- **जलवायु एवं मिट्टी:**
- यह फसल मध्यम बलुई से लेकर काली दोमट तक अनेक प्रकार की मिट्टी में कम से मध्यम वर्षा वाले उप उष्णकटिबंधीय जलवायु में उगाई जा सकती है।
- **कृषिकरण सामग्री:** बीज

नर्सरी की विधि

पौधे उगाना:

- फसल को बीजों की बुआई से उगाया जाता है जो आसानी से अंकुरित हो जाते हैं।
- एकल फसल के रूप में, प्रति हेक्टेयर 8 किलो बीजों की जरूरत होती है।

खेत में रोपाई

भूमि की तैयारी और उर्वरक का प्रयोग:

- जुताई और मिट्टी के साथ उर्वरक मिला के 10 मीटर/हेक्टेयर जुताई की जाती है।

रोपण की दूरी:

- बीजों को कतारों में 60 X 30 सेमी की दूरी पर बोया जाता है।

अन्य फसल प्रणाली:

- वृक्षारोपण/बगीचों में अन्य फसल के तौर पर इस फसल की खेती की जा सकती है।

संवर्धन विधियां:

- बढ़त के शुरूआती दौर के दौरान नियमित निराई और गुड़ाई की जरूरत पड़ती है।

सिंचाई:

- यह फसल वर्षा पोषित है और आंशिक सूखे की स्थिति में भी बनी रह सकती है।

बीमारी और कीट नियंत्रण:

- साप्ताहिक अंतराल पर 3 से 4 बार 3% की दर से भिगोने योग्य सल्फर (सल्फेक्स) का छिड़काव करने से पाउडर फफूंदी पर नियंत्रण किया जा सकता है।
- पत्तियों को लपेटने वाली इल्लियां बीमारी को, 0.2% एंडोसल्फान के 2–3 छिड़काव से नियंत्रित किया जा सकता है।

फसल कटाई

फसल पकना और कटाई:

- बुआई के 200 दिनों जब फलियां बैंगनी रंग की हो जाती हैं तो फसल तैयार होती है
- फलियों के पूरी तरह सूख जाने के बाद बीज एकत्रित किए जाते हैं।

कटाई पश्चात प्रबंधन:

- छाया में सुखाए गए बीजों को विपणन के लिए जूट के बैगों में भंडारण किया जाता है।